SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

स्त्री संघर्ष में अरुणाचल की आवाज : मिनाम

आभा मलिक, शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
आभा मलिक, शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/01/2022
Revised on : -----
Accepted on : 10/01/2022
Plagiarism : 00% on 03/01/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Monday, January 03, 2022
Statistics: 8 words Plagiarized / 2710 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

L=h la?k"kZ esa v#.kkpy dh vkokt : feuke vkHkk efyd 'kks/k Nk=k] fgUnh foHkkx dk'kh fgUnw fo'ofo|ky;] okjk.klh bZesy& aabhamalik1@gmail-com lkjka'k : bl miU;kl esa ysf[kdk us ijaijkxr :i ls pyh vk jgh L=h ijk/khurk o 'kks"k.k ds fo#) ;keh vkSj feuke dk lEiw.kZ O:fåÙo [kM+k fd;k gS A ;keh dk la?k"kZ lekt esa ukjh eqfå] ukjh ds lEekutud LFkku o vfLrÙo dh LFkkiuk ds LoÙu dks txkus vkSj feuke dk la?k"kZ bl LoÙu dks iw.kZ djus dk çrhd cu x;k gS tks ;kih vkSj ;ktqe ds ek/;e ls çfrQyr gqvk gS A ^feuke ,d vkfnoklh L=h

शोध सार

इस उपन्यास में लेखिका ने परंपरागत रूप से चली आ रही स्त्री पराधीनता व शोषण के विरुद्ध यामी और मिनाम का सम्पूर्ण व्यक्तित्त्व खड़ा किया है। यामी का संघर्ष समाज में नारी मुक्ति, नारी के सम्मानजनक स्थान व अस्तित्त्व की स्थापना के स्वप्न को जगाने और मिनाम का संघर्ष इस स्वप्न को पूर्ण करने का प्रतीक बन गया है, जो यापी और याजुम के माध्यम से प्रतिफलित हुआ है।

मुख्य शब्द

स्त्री संघर्ष, पितृसत्ता, नारी शिक्षा, आत्मनिर्भरता, स्त्री अधिकार, स्त्री शोषण.

'मिनाम एक आदिवासी स्त्री की संघर्ष गाथा' उपन्यास अरुणाचल की एक प्रमुख जनजाति गालो जनजाति के जीवन,समाज तथा संस्कृति पर लिखा गया है। इसकी लेखिका मोर्जुम लोयी स्वयं अरुणाचल की गालो जनजाति से हैं इसलिए इसमें लेखिका की अनुभव की प्रामाणिकता दृष्टिगोचर होती है। यह उपन्यास मुख्यतः एक स्त्री के जीवन को केंद्र में रखकर लिखा गया है। पूर्वोत्तर भारत के राज्यों का अधिकांश समाज जनजाति बहुल आदिवासी समाज है जिनके बारे में यह एक आम धारणा होती है कि जनजातीय समाज में नारी की स्थिति हमारे समाज की तुलना में बेहतर होती है। परंतु लेखिका ने यहाँ तमाम विरोधाभासों को ध्वस्त करते हुए नारी की यथार्थ स्थिति को सटीक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

इस उपन्यास में स्त्री संघर्ष के कुछ महत्त्वपूर्ण पहलुओं को उकेरा गया है जिसमें कुछ तो आदिवासी संस्कृति के अंतर्गत आते हैं तथा कुछ स्त्रियों की जन्म जन्मांतर की गाथा कही जा सकती है। कथा का आरम्भ अरुणाचल के आदिवासी समाज और उसकी संस्कृति के साथ होता है। इटानगर में कालेज में पढ़ने वाली 'यामी'

इसी आदिवासी समाज का हिस्सा है जो खूबसूरत,पढ़ने–लिखने में होशियार एवं प्रगतिशील सोच वाली है। एक कैंप के दौरान पिछड़े गाँवों की दुर्दशा ने उसे ऐसे द्रवित किया कि वह अपने गाँव जाकर वहाँ की दशा सुधारने के लिए अग्रसर होती है क्योंकि "जिस गाँव में कैंप हुआ वो पिछड़ा हुआ है, बच्चे नंगे घूम रहे थे। साफ–सफाई नाम की कोई चीज वहाँ नहीं है, जानवरों के बीच यह इतनी गंदी हालात में रह रहे हैं। .....हम उन्हें साफ–सफाई के बारे में बता रहे थे पर उनका कहना है कि वे सदियों से पशुओं के साथ रह रहे हैं, इसमें उन्हें कोई बुराई नहीं दिखती।"[1]

गाँव की इस हालत को देखते हुए यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत के पूर्वी राज्यों के आदिवासी बहुल ग्राम अभी भी आधुनिकता से मीलों दूर एवं व मूलभूत बुनियादी व सरकारी सुविधाओं से अछूते हैं, जहाँ इंसान और पशु साथ–साथ एक ही बाड़े में रह रहे हैं। अगर ध्यान दिया जाए तो यह साफ पता चलता है कि इस प्रकार का रहन–सहन आदिवासी संस्कृति का हिस्सा तो कदापि नहीं है। आदिम संस्कृति को संभाले रखना और आज भी पशुओं के साथ जीवन–यापन करना दोनों अलग बातें हैं। आदिमानव पशुओं के साथ रहते थे क्योंकि वे असभ्य एवं पशुतुल्य ही थे परन्तु आज आदिमानव सुसंस्कृत मनुष्य बन चुका है, तो आज के समय में यह समानता सामाजिक एवं सांस्कृतिक किसी भी स्तर पर सही नहीं है। यामी इस बात से भली–भांति अवगत है इसलिए वह गाँव की स्थिति को सुधारना चाहती है। इस साध्य के लिए वह सबसे महत्त्वपूर्ण साधन शिक्षा को मानती है तभी तो वह अपने गाँव जाकर वहाँ के अशिक्षित बच्चों, बूढ़ों को शिक्षित करने में जुट जाती है। अपनी इस निःस्वार्थ सेवा के लिए उसे उसे भारी कीमत चुकानी पड़ती है। तातुम, जो गाँव बूढ़ा का बेटा है से उसकी जबर्दस्ती शादी करवा दी जाती है। इस प्रकार पढ़–लिखकर आगे बढ़ने, कुछ करने का उसका स्वप्न मध्य में ही टूट जाता है। जिन कुरीतियों एवं पिछड़ेपन को दूर करने के लिए यामी मोदी ग्राम आती है उन्होने ही उसे जकड़कर पूरी तरह तोड़ दिया और वह अपने लिए कुछ न कर सकी। इसका दोष किसको दिया जाए? यामी के प्रगतिशील विचारों को जिससे आहत हुए तातुम ने उससे जबर्दस्ती शादी कर ली या उस पिछड़े आदिवासी समुदाय को जिसमें अभी भी बहुपत्नी विवाह, अपहरण विवाह जैसी कुप्रथाएँ व्याप्त हैं जिनका कोपभाजन अंततः स्त्रियाँ ही बनती हैं, "प्राचीन काल में किसी लड़की की मर्जी के बगैर उसकी शादी तय कर दी जाती थी। इंकार करने पर उसे जबरन उठवाकर कमरे में पुरुष के साथ हाथ–पैर बांधकर भूखे–प्यासे बंद कर दिया जाता था। यह तब तक चलता जब तक भूखी–प्यासी लड़की आत्म–समर्पण न कर दे। कई हालात में उसे बलात्कार जैसे जघन्य अपराध का भी शिकार होना पड़ता था।"[2] यामी के साथ भी यही हुआ। तातुम पीकर आता, लात–घूंसे मारता, गालियाँ बकता और चला जाता। अंततः यामी का रोना–बिलखना सब बेकार साबित हुआ। बाकी सब अबला लड़कियों की तरह आत्म–समर्पण करना ही पड़ा।

अब उसने अपने सपनों को अपनी बेटियों यापी, याजुम के माध्यम से पूरा करने का निश्चय किया और उनको पढ़ाने–लिखाने में लग गयी। तातुम और परिवार के लोगों के खिलाफ जाकर उसने यापी और याजुम को इटानगर के अच्छे स्कूल में दाखिला भी करा दिया। इधर पुत्र प्राप्ति की इच्छा के कारण वंश चलाने के नाम पर यामी का पति दूसरी शादी का विचार बनाने लगा। जैसा कि ज्ञातव्य है आदिवासी समाज में बहुपत्नी विवाह का प्रचलन है। कुछ पत्नी की मृत्यु पर, कुछ बेटे की चाह में तो कुछ अपनी ऐय्याशी के लिए एक से अधिक विवाह करते हैं। इसे सामाजिक प्रथा कहा जाए या पुरुषों की कामुक वृत्तियों को संतुष्ट करने का जरिया। कुछ इसी प्रकार की नोक–झोंक के दौरान तातुम ने यामी को ऐसी मार दी कि उसकी चीख सदा के लिए शांत हो गयी। तातुम को यामी का महत्त्व उसकी मृत्यु के बाद समझ आया और इसी पश्चाताप के कारण वह अपनी बेटियों की पढ़ाई के लिए अपरोक्ष रूप से मदद करने लगा। उच्चतर शिक्षा के लिए यापी, याजुम दिल्ली आ जाती हैं। यहाँ पढ़ाई के दौरान यापी याजुम की मुलाकात 'मिनाम' से होती है जो अरुणाचल की गालो जनजाति की महिला है और उसे भी यामी की भाँति शिक्षित होने के लिए बचपन से अनेक कष्टों–संघर्षों का सामना करना पड़ा है। यामी के गुजरने के बाद मिनाम का चरित्र यापी और याजुम के सपनों में पंख लगाने और प्रेरणा देने का काम करता है। मिनाम भी यामी की भाँति शिक्षा को सुधार के लिए सबसे आवश्यक मानती है। मिनाम ने अपनी संघर्ष–गाथा को अपनी डायरी में जगह दी। इसका कारण भी वह बताती है "कोई मेरी सुनता नहीं था, इसलिए मैंने डायरी को ही अपना साथी बना दिया।"[3] इस व्यक्तव्य से साफ समझ आता है कि उसकी भावनाओं, विचारों को सुनने–समझने वाला कोई नहीं था।

ये समस्या मिनाम की ही नहीं समाज में अनेक स्त्रियों की है जिनकी भावनाओं को समझना तो दूर उनकी बात तक नहीं सुनी जाती है।

मिनाम की दी हुई डायरी से यापी, याजुम की इच्छाशक्ति और भी दृढ़ हुई जिसका परिणाम जीवन में उनकी सफलता रही। मिनाम जो घर में अपने भाई–बहनों में सबसे छोटी तथा सबसे अधिक उपेक्षित थी, कारण कि वह बेटे की चाह में अनचाही बेटी थी। इस कारण उसका जीवन बचपन से ही अभावग्रस्त रहा "मुझे उस समय अपनी हालत का अंदाजा ही नहीं था, आज सोचती हूँ तो मुझे बड़ी लज्जा का अनुभव होता है। माँ थी, सब बहने थीं, भले ही उनकी शादी हो चुकी थी, पर इतनी दूर भी नहीं थीं। क्या यह भी बेटी होने की एक सजा थी ?... उस वक्त में पढ़ने न भी जाती तो किसी को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था।"[4] ऐसे अभावग्रस्त और घोर उपेक्षित जीवन में जरा सा सहारा एक लड़की को भावुक बनाने के लिए काफी होता है। यही मिनाम के साथ भी हुआ। स्कूल के दौरान एक लड़के से उसकी नजदीकियाँ बढ़ीं। देखते ही देखते यह नजदीकी प्रेम फिर विवाह में परिणत हो गयी। मिनाम की किशोर बुद्धि ने यह फैसला समय से पहले ले लिया जो उसके जीवन में संघर्षों का तूफान लेकर आया। यह प्रेम विवाह अधिक दिनों तक प्रेम के दायरे में न रह सका, दिनों–दिन हिंसक रूप लेता गया। मिनाम की स्वतन्त्रता तो छिनी ही उसे रोजाना की मारपीट अर्थात् घरेलू हिंसा का भी सामना करना पड़ता। मारपीट की इस दिनचर्या ने मिनाम को इतना अभ्यस्त बना दिया कि यह दर्द और अपमान उसे बेमानी लगने लगे – "वो मुझे पहले जानवरों की तरह पीटता, फिर रात को मुझसे माफी माँगता और खूब प्यार से पेश आता। धीरे–धीरे मैं भी उसकी इस बात की आदी हो गयी।"[5] दुर्भाग्य से यह विडम्बना केवल मिनाम की ही नहीं बल्कि हमारे समाज की अधिकांश महिलाओं की है जो दुख–दर्द सहते सहते इतनी आदी हो जाती हैं कि सुख–दुख में फर्क करना ही भूल जाती हैं और इस दुख–दर्द–अपमान को अपने भाग्य के नाम पर जिंदगी का हिस्सा मानकर जीवनयापन करने लगती हैं। यामी और मिनाम दोनों ही चरित्रों को देखकर ये बाते सिद्ध हो जाती हैं। भले ही आरंभ में इनका चरित्र कितना भी प्रगतिशील रहा हो परंतु पुरुषवादी समाज की बेड़ियों ने इन्हें भी जकड़ लिया। यामी तो इन जकड़बन्दियों से निकल ही नहीं पाती, बल्कि इस पितृसत्ता के जाल में दम–तोड़ देती है, लेकिन मिनाम ने अनेक स्तरों पर संघर्ष के बावजूद अपने अस्तित्त्व को बनाए रखा। विवाह से लेकर तलाक तक के सफर कठिनाइयाँ तो मिली लेकिन इन्ही कठिनाइयों ने मिनाम के चरित्र को मजबूती भी प्रदान की जिसके फलस्वरूप वह अपनी पढ़ाई पूरी करके अस्सिटेंट प्रोफेसर की नौकरी प्राप्त करती है। इस उपन्यास में मिनाम की तलाकशुदा जिंदगी के जरिये समाज में स्त्रियों के शोषण और उनकी स्थिति के कटु सत्य को बखूबी चित्रित किया गया है –"'तलाक' स्त्री के लिए संसार का सर्वाधिक अपमानजनक शब्द है। .....दुनिया क्या कहेगी? समाज क्या कहेगा? यह डर हर किसी के जेहन में रहता है खासकर हम लड़कियों के मन में तो रहता है। तभी तो लड़कियों को समाज के दकियानूसी रिवाजों के पालन हेतु कई कुर्बानियाँ देनी पड़ती हैं। बात तलाक की है इसलिए कहती हूँ पति से शोषित पत्नियाँ 'तलाकशुदा' खिताब से बचने के लिए ताउम्र पीड़ा सहती हैं।"[6] वैसे तो तलाक पति–पत्नी दोनों का होता है परंतु हमारे पितृसत्तात्मक समाज में यह ऐसा शब्द है जिसका सर्वाधिक दंश स्त्रियों को ही झेलना पड़ता है। वैसे तो तलाक का अभिप्राय अर्थहीन हो चुके शादीशुदा जीवन में मिलने वाले दर्द से मुक्त होने से है लेकिन "यहाँ तलाक दर्द का अंत नहीं,बल्कि एक नए दर्द का आरंभ है।"[7] एक प्रताड़ित स्त्री तलाक लेकर कुछ पुरुषों की पाशविक वृत्तियों से स्वयं को बचाते हुए, तथाकथित शिष्ट समाज के तानों से गुजरते हुए स्वयं के अस्तित्त्व को पुनःस्थापित करने का प्रयास करती है। असिस्टेंट प्रोफेसर की नौकरी जॉइन करने के उपरांत मिनाम आर्थिक रूप से तो मजबूत हो जाती है परंतु हमारे समाज में यदि कोई औरत अकेले है तो वह चाहे आर्थिक रूप से कितना भी आत्मनिर्भर हो जाए, समाज की नजरों में उसका कोई अस्तित्व नही होता, वह 'सॉफ्ट टार्गेट' समझी जाती हैं। मिनाम के साथ भी कुछ ऐसा ही होता है। कॉलेज के निकट जिस किराए के मकान में वह रहती है, उस मकान–मालिक का व्यवहार भी मिनाम के प्रति कुछ ऐसा ही होता है। अब इसे समाज का पिछड़ापन कहें या ऐसे पुरुषों की अमानुषिक वृत्ति का दोष अथवा स्त्री की प्रकृति और उसके अकेलेपन व उसके जीवन की परिस्थितियों का दोष। आज समाज जबकि उत्तर आधुनिक युग में पहुँच चुका है, परंतु स्त्रियों की सुरक्षा, निजत्व पर प्रश्नचिन्ह आज भी बना हुआ है। इसी तथ्य पर क्षोभ व्यक्त

करते हुए तसलीमा नसरीन लिखती हैं, "औरत का अपना कुछ भी नहीं होता। अपनी जो जिंदगी है, वह भी औरत की नहीं। औरत पुरुष की संपत्ति होती है। सिर्फ पुरुष नहीं पुरुष शासित इस समाज की संपत्ति होती है।"[8] आज भी स्त्री चाहे अपने जीवन में जितने भी संघर्ष कर ले और अच्छे मुकाम पर पहुँच जाए लेकिन पुरुषवादी दृष्टि में वह मात्र औरत ही समझी जाती है। हमारे ऐसे समाज में कुछ स्त्रियाँ यामी की भांति जीवन के दुख–दर्द झेलकर सदैव के लिए शांत हो जाती हैं तो कुछ अपने जीवन के साथ समझौता कर लेती हैं।

मिनाम के लिए भी बचपन से मिली घोर उपेक्षा से लेकर एक सम्मानजनक पद प्राप्त करने तक उसके जीवन में अनेक उठा–पटक आए। ऐसी परिस्थितियों में एक आम, निर्धन स्त्री के लिए स्वयं को स्थापित करना बहुत चुनौतीपूर्ण है। अपने संघर्षों और पीड़ा को व्यक्त करते हुए समाज के दृष्टिकोण पर प्रश्न उठाते हुए मिनाम कहती है "तुम पीड़ा–पीड़ा करते हो, मुझसे पूछो, मार, धोखा, गरीबी, भूख, की असली पीड़ा किसे कहते हैं.... ऐसा कोई दर्द, ऐसी कोई तकलीफ नहीं जो मैंने न देखी हो... मार मैंने खाई, जुल्म मुझ पर हुआ, धोखा मैंने खाया... फिर भी समाज की नजरों में मैं ही क्यूँ गलत हूँ? गलत तो मैं तब भी नहीं थी, जब मैं लड़की पैदा हुई थी..."[9]

इतने कष्टों व संघर्षों के बावजूद दूसरों से नाउम्मीदी और स्वयं पर विश्वास ने मिनाम के जीवन को संघर्षों में राह दिखाई। यामी की बेटियों यापी, याजुम के लिए उनकी माँ का संघर्ष एवं त्याग जहाँ प्रेरणा स्रोत बना वहीं दूसरी ओर मिनाम की दृढ़ता एवं आत्मविश्वास से इनके लक्ष्य को और भी गति मिली। आगे चलकर यापी, याजुम दोनों उसी मोदी ग्राम में कलेक्टर और डॉक्टर बनकर आती हैं जिसके सुधार व उत्थान के लिए यामी अपने प्राणों को त्याग देती है। इस प्रकार यापी, याजुम अपनी माता यामी के आधे रह गए कार्यों को पूरा तो करती ही हैं, साथ ही उस पितृसत्तात्मक समाज को भी आईना दिखाती हैं, जिसमें नारी शिक्षा, नारी मुक्ति, समाज में उसके बराबरी के दर्जे व सम्मान तथा नारी के अस्तित्त्व की पहचान के लिए संघर्ष करने वाली नारियों को समाज के झूठे नियमों की बेड़ियों में जकड़कर कैद कर दिया जाता है और इस व्यवस्था के दुष्चक्र में फँसकर यामी जैसी संघर्षशील नारियों को अपने स्वप्न अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करने पड़ते हैं।

लेखिका ने यामी के संघर्ष और मिनाम के आत्मविश्वास और दृढ़ व्यक्तित्त्व के माध्यम से समाज के सम्मुख स्त्री सशक्तिकरण का उदाहरण प्रस्तुत किया है। जब स्त्रियाँ स्वयं अपने लिए आगे नहीं आएंगी, उन्हें यामी की भाँति इस पुरुषवादी समाज व्यवस्था द्वारा दबा दिया जाता रहेगा। कठिन परिस्थितियाँ यामी और मिनाम दोनों ही के सामने लगभग समान थी, पर यामी जहाँ अपने से अधिक अपने परिवार के बारे में सोचती है और अपने सपनों को अपनी बेटियों के जेहन में पिरो देती है वहीं दूसरी ओर मिनाम यह जानते हुए भी कि हमारे समाज में एक तलाकशुदा औरत का जीवन कितना यातनापूर्ण होता है, अपने पति से तलाक के बाद संघर्षों से गुजरकर और भी अधिक मजबूत बनती है और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर समाज में एक सम्मानजनक स्थान बनाने, अपने अस्तित्त्व को स्थापित करने का प्रयास करती है।

निष्कर्ष

अंत में कहा जा सकता है कि किसी भी समाज, राष्ट्र के कल्याण के लिए उसमें नारी व पुरुष समाज के मध्य में व्याप्त असमानताओं, अधिकारों व उत्तरदायित्वों के आसमान विभाजन को दूर करने लिए प्रयास करना अति आवश्यक है। तभी एक स्वस्थ, समतापूर्ण समाज का निर्माण संभव है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने गालो जनजातीय समाज की सांस्कृतिक विशिष्टताओं के साथ–साथ उसमें नारी की स्थिति को दर्शाने का सही तरीके से प्रयास किया है। नारी का शोषण एक ऐसा यथार्थ है, चाहे कोई भी समाज हो, मुख्यधारा का या आदिवासी, स्त्री–शोषण दैहिक, मानसिक व सामाजिक स्तर पर हर जगह व्याप्त है। यह उपन्यास जनजातीय समाज में नारी के शोषण, दमन, उत्पीड़न व संघर्ष का दस्तावेज बन गया है। इस उपन्यास में यामी और मिनाम के माध्यम से नारी चिंतन, स्त्री–विमर्श के साथ उसकी आत्मकथा के भी दर्शन होते हैं। यामी, मिनाम, यापी और याजुम के चरित्रों के माध्यम से लेखिका पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में पुरुष वर्चस्व के खिलाफ नारी की अपनी 'स्व' की पहचान को स्थापित करने का प्रयास किया है। साथ ही नारियों को समाज में बराबरी का दर्जा व सम्मानजनक स्थिति प्राप्त

करने के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान की है। इस संदर्भ में महादेवी वर्मा का यह कथन बहुत प्रासंगिक लगता है" भारतीय नारी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राण–आवेग से जाग सके, उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए संभव नहीं। उसके अधिकारों के संबंध में यह सत्य है कि वे भिक्षावृत्ति से न मिले हैं, न मिलेंगे, क्योंकि उनकी स्थिति आदान–प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न है।"

संदर्भ सूची

01. लोयी मोर्जुम, *मिनाम एक आदिवासी स्त्री की संघर्ष गाथा,* बोधि प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 16।
02. वही, पृष्ठ संख्या 42।
03. वही, पृष्ठ संख्या 146।
04. वही, पृष्ठ संख्या 74।
05. वही, पृष्ठ संख्या 87।
06. वही, पृष्ठ संख्या 106।
07. वही, पृष्ठ संख्या 107।
08. नसरीन तसलीमा, *औरत का कोई देश नहीं,* वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 155।
09. लोयी मोर्जुम, *मिनाम एक आदिवासी स्त्री की संघर्ष गाथा,* बोधि प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 139।
10. वर्मा महादेवी, *शृंखला की कड़ियाँ,* लोकभारती पेपरबैक्स।

****